विचार बिन्दु

मेरे दोस्त किसी चीज़ को कुरूप ना कहो, सिवाय उस भय के जिसकी मारी कोई आत्मा स्वयं अपनी स्मृतियों से डरने लगे। -खलील जिब्रान

आयुर्वेद को युगानुकूल बनाने की सलाह क्या राइज़िंग राजस्थान सुनेगा?

जोधपुर में राष्ट्रीय आयुर्वेद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'आयुर्वेदिक औषधि मानकीकरण-चुनौतियां और समाधान' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने पिछले हफ्ते कहा कि आयुर्वेद के भारतीय ज्ञान को युगानुकूल बनाते हुए उसकी औषधियों पर शोध और अनुसंधान को बढ़ावा दे कर उनका प्रसार किया जाना चाहिये। उनकी यह भी सलाह थी कि आयुर्वेद की औषधियों के प्रमाणीकरण और पेटेंट पाने के प्रयत्न भी किये जाने चाहिये।

उनकी यह सलाह भी थी कि आयुर्वेदिक औषधियों की ब्रांडिग और पैकेजिंग ऐसी हो कि वह उपयोग के लिए लोगों को आकर्षित करे। उन्होंने आयुर्वेदिक औषधियों के विपणन की कारगर नीति पर भी कार्य करने पर जोर दिया। राज्यपाल की इन सलाहों से कौन इनकार कर सकता है। भारतीय चिकित्सा का इतिहास बहुत पुराना है। यहां पुरातन काल में उन्नत चिकित्सा तथा औषध विज्ञान था जिस पर हम भारत के लोग सहज ही गर्व कर सकते हैं। भारत के लोग अपने आयुर्वेद पर गर्व तो करते हैं मगर बीमारी तथा दुर्घटना की आपात् स्थिति में भरोसा ऐलोपैथी की आधुनिक पद्धति पर ही करते हैं। लोग ही क्यों आयुर्वेद चिकित्सक भी निदान के लिए ऐलोपैथी के जांच केंद्रों की रिपोर्टों का सहारा लेते हैं। राज्यपाल की सलाह क्या राइज़िंग राजस्थान सुनेगा? भारतीय चिकित्सा और औषध विज्ञान की आरंभिक अवधारणाएं कालातीत वेदों में खोजी जा सकती हैं। भारतीय मेधा ने इस पुरातन चिकित्सा विज्ञान को आयुर्वेद नाम देकर उसे स्वतंत्र वेद का दर्जा ही दे दिया और इस पद्धति के प्रणेता माने गये धन्वंतरि को चिकित्सा के देवता के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। कोई दो-तीन सौ साल हुए अंग्रेजों के आगमन के साथ आई ऐलोपैथी की चिकित्सा पद्धति के पहले तक आयुर्वेद चिकित्सा से ही इस विशाल भू-भाग में बसने वालों का बीमारियों में इलाज होता आया था। यवनों के साथ यूनानी चिकित्सा पद्धति भी आई। आयुर्वेद का स्वर्ण युग, 800 ईसा पूर्व से लेकर लगभग 1000 ई. तक, विशेष रूप से चरक-संहिता और सुश्रुत-संहिता जैसे चिकित्सा ग्रंथों के निर्माण के साथ माना जा सकता है। चरक, एक चिकित्सक और सुश्रुत, एक शल्य चिकित्सक के रूप में हमारे सामने आते हैं। अनुमान लगाया जाता है कि चरक-संहिता अपने वर्तमान स्वरूप में पहली शताब्दी ई.पू. से है, हालांकि इससे पहले के संस्करण भी थे। सुश्रुत-संहिता संभवतः ईसा पूर्व की अंतिम शताब्दियों में उत्पन्न हुई थी और 7वीं शताब्दी ई.पू. तक अपने वर्तमान स्वरूप में स्थिर हो गई थी। भारतीय चिकित्सा पद्धति पर बाद का समस्त लेखन इन्हीं के कार्यों पर आधारित रहा है। बाद का काल वह समय है जब आयुर्वेद में कुछ नया नहीं जुड़ता। कोई नया अनुसंधान नहीं होता। सिर्फ संस्कृत के रटे हुए ज्ञान के आधार पर वैद्य अपना रोज़गार चलाते रहे। प्राचीन भारत में स्वतंत्र रूप से विकसित हुए आयुर्वेद में चिकित्सा की मूल अवधारणा केवल उपचार की नहीं थी, बल्कि उसके साथ आहार, जलवायु, अनुभवजन्य और संस्कृति का बहुआयामी संयोजन भी था।

उसमें अलौकिक शक्ति में विश्वास और आस्था का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा। आयुर्वेद को आधुनिक युग में चुनौती मिली नित नयी खोजों में जुटे पश्चिम के चिकित्सा विज्ञानियों से, जो भारतीय अनुभवजन्य ऋषि परंपरा, जो अति गोपनीय होती थी, के विपरीत सार्वजनिक रूप से प्रयोगजनित अनुसंधान करते थे। पश्चिमी विज्ञान में प्रयोगों के दावों की पुष्टि उसी क्षेत्र में काम कर रहे अन्य वैज्ञानिक स्वतंत्र रूप से करते हैं। पश्चिम के विज्ञान ने अनुसंधान और खोजों को मान्यता देने की बेहतरीन प्रणाली विकसित की। दुर्भाग्य से आयुर्वेद ऐसे विकास से कटा रह गया। इसीलिए आज एलोपैथी आयुर्वेद पर भारी पडती है। इसी कारण आज राज्य के पहले नागरिक को यह कहना पड़ रहा है कि भारतीय आयुर्वेद के ज्ञान को युगानुकूल बनाया जाय। इसका मतलब यदि कोई यह निकाले कि आज का आयुर्वेद वर्तमान युग के अनुकूल नहीं है तो वह गलत नहीं होगा।

जब राज्यपाल कहते हैं कि आयुर्वेद को युगानुकूल बनाओ तब लाख टके का सवाल उठ खड़ा होता है कि यह काम कौन करेगा? स्वाभाविक ही यह काम उच्च शिक्षा के उन संस्थानों को करना है जिनकी स्थापना सरकारों ने इतिहास पर गर्व करते हुए की है और कर रही है। हमारे राज्य में आयुर्वेद का न केवल स्वतंत्र विभाग है बल्कि ऐलोपथी के चिकित्सकों के बराबर आयुर्वेद चिकित्सकों को सरकारी सुविधाएं मिली हुई है। अब तक की सभी सरकारों ने राज्य में आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए काम किये हैं। राज्य में केंद्र सरकार का राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान है, राज्य का आयुर्वेद विश्वविद्यालय है और आयुर्वेदिक कालेज हैं। मगर यह सारा उद्यम आयुर्वेद के नाम पर सरकारी रोज़गार देने भर का हो कर रह गया लगता है। रोज़गार पाने के आकांक्षी, ज्ञान के लिए नहीं बल्कि सुरक्षित सरकारी नौकरी और अच्छी पगार के लिए आते हैं। प्रदेश में जब उच्च शिक्षा के सारे ही संस्थानों के हाल बेहाल हों तब आयुर्वेद के लिए क्या कहा जा सकता है! उच्च शिक्षा के संस्थान कागज की डिग्रियां बांटने के उपक्रम बन कर रह गये हैं। राज्यपाल राज्य का प्रमुख होता है जिसके नाम पर निर्वाचित सरकार काम करती है, साथ ही वह उच्च शिक्षा के संस्थानों अर्थात विश्वविद्यालयों का पदेन कुलपति भी होता है। इसलिए राज्यपाल के इस आव्हान को केवल सलाह नहीं माना जा सकता। प्रदेश की जनता की यह आकांक्षा जायज ही होगी कि जिस तरफ राज्यपाल ने इंगित किया है उस तरफ सरकार क्या कदम उठाती है। यह देखना दिलचस्प होगा कि राज्यपाल की बात पर कान दिया जाता है या नहीं। आम जनता का अनुभव है कि ऐसी लोकलुभावनी आदर्श की बातें होती हैं, बातों का क्या। यदि राज्यपाल के आयुर्वेद को युगानुकूल बनाने के कथन पर अमल होना है तो इसके लिए शासन में बैठे नीति निर्धारकों को कुछ चीजों पर स्पष्ट होना पड़ेगा। उन्हें आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के बीच सबसे बुनियादी अंतर और स्वास्थ्य और उपचार के प्रति दोनों के बीच दृष्टिकोण के फ़र्क को भी ठीक से समझना होगा। जब तक, बिना किसी पूर्वाग्रह के और खुले दिमाग के, दोनों के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से नहीं समझा जायेगा तब तक वास्तविक धरातल पर कुछ भी काम नहीं हो सकेगा। केवल भावनाओं में बह जाने और यह कह देने भर से काम नहीं चलेगा कि आयुर्वेद समग्र कल्याण और संतुलन पर जोर देता है, जबकि आधुनिक चिकित्सा मुख्य रूप से बीमारियों और लक्षणों के उपचार से संबंधित है। आयुर्वेद के समर्थक तथा ऐलोपैथी के चिकित्सक एक दूसरे को नीचा दिखाने में जुटे रहते हैं। दोनों में समन्वय की बात कभी नहीं होती। दोनों तरफ की अड़ी बीच में आ जाती है। आयुर्वेद के समर्थकों को विगत पर गर्व है तो आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के संचालकों को अपने आज के ज्ञान पर स्वाभाविक अभिमान है। इसके अलावा चिकित्सा पद्धतियों के लोगों के अपने-अपने हित भी जुड़ गये हैं, जो कुछ भी नया नहीं होने देते तथा राजनेता उनके दबाव में रहते हैं।

> **आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा दोनों का स्वास्थ्य सेवा में अपना-अपना स्थान है। एक को दूसरे पर चुनने के बजाय, दोनों प्रणालियों की विशिष्ठताओं को एकीकृत करने से स्वास्थ्य के लिए अधिक संतुलित तथा व्यापक दृष्टिकोण बनाया जा सकता है, जिससे आम नागरिक को दोनों का लाभ मिल सकता है। आयुर्वेद को युगानुकूल बनाने के लिए पहली शर्त है संस्कृत का ज्ञान।**

आयुर्वेदिक उपचार संतुलन को बहाल करने के लिए जड़ी-बूटियों, तेलों और आहार परिवर्तनों जैसे प्राकृतिक उपचारों पर निर्भर करते हैं। इसमें योग और ध्यान जैसे जीवनशैली में बदलाव भी शामिल हैं। दूसरी ओर, आधुनिक चिकित्सा पद्धति स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने के लिए फार्मास्यूटिकल्स, सर्जरी और उन्नत चिकित्सा तकनीकों का उपयोग करती है। ऐसा कहना भी उचित नहीं होगा कि केवल आयुर्वेद ही शरीर को रोगमुक्त रखने की क्षमता रखता है। भले ही आधुनिक चिकित्सा पद्धति बीमारियों के होने के बाद उन्हें ठीक करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है, किन्तु उसमें भी एक अलग महत्वपूर्ण विषय है 'प्रीवेंटिव एंड सोशल मेडिसिन' (पीएसएम) जो एमबीबीएस के पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हाल के वर्षों में आधुनिक चिकित्सा में टीके और जांच जैसी निवारक देखभाल अधिक प्रमुख होती जा रही है।

जहां आयुर्वेद व्यक्तिगत उपचार प्रदान करता है, वहीं आधुनिक चिकित्सा, उम्र और लिंग जैसे व्यक्तिगत कारकों को ध्यान में रखती है, तथा नैदानिक दिशानिर्देशों के आधार पर अधिक मानकीकृत उपचार प्रदान करती है। आयुर्वेदिक उपचारों के लिए अक्सर माना जाता है कि उनकी औषधियों के साइड इफेक्ट नहीं होते क्योंकि वे प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बनाई जाती है। हालांकि विशेषज्ञों ने उनके भी साइड इफ़ेक्ट बताते हुए आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण के दौरान वातावरण की स्वच्छता पर सवाल उठाये हैं। आधुनिक चिकित्सा, दवाओं की सिंथेटिक प्रकृति के कारण, अक्सर अधिक गंभीर दुष्प्रभावों का जोखिम लेकर आती है, मगर उनके लिए दवा निर्माता कंपनियां चिकित्सकों के ज्ञान को लगातार अद्यतन करती रहती हैं।

दवाओं की पैकिंग पर भी उनका ज़िक्र अनिवार्य होता है। आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा दोनों का स्वास्थ्य सेवा में अपना-अपना स्थान है। एक को दूसरे पर चुनने के बजाय, दोनों प्रणालियों की विशिष्ठताओं को एकीकृत करने से स्वास्थ्य के लिए अधिक संतुलित तथा व्यापक दृष्टिकोण बनाया जा सकता है, जिससे आम नागरिक को दोनों का लाभ मिल सकता है। आयुर्वेद को युगानुकूल बनाने के लिए पहली शर्त है संस्कृत का ज्ञान। संस्कृत के ज्ञान के बिना आयुर्वेद का केवल ढोल बजाया जा सकता है परिणाम नहीं पाये जा सकते है।

हालांकि चिकित्सा और स्वास्थ्य की बढ़ती समझ के साथ बहुत से लोग अब अच्छे स्वास्थ्य परिणाम प्राप्त करने के लिए आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के संयोजन की ओर रुख कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति तनाव और पाचन की समस्या के समाधान के लिए आयुर्वेदिक सलाह का उपयोग कर सकता है, जबकि संक्रमण या चोट जैसी अधिक गंभीर स्थितियों के लिए आधुनिक चिकित्सा पर निर्भर हो सकता है। यह एकीकृत दृष्टिकोण ही बेहतर रास्ता हो सकता है।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री

प्रो. अशोक कुमार

भविष्य में उच्च शिक्षा का स्वरूप बदल रहा है, और इस बदलाव में माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक नया और रोमांचक विकास हैं। ये छोटे, लक्षित पाठ्यक्रम हैं जो पारंपरिक डिग्री की तुलना में कम समय और धन में विशिष्ट कौशल और ज्ञान प्रदान करते हैं।

माइक्रो-डिग्री क्या है?

पारंपरिक डिग्री की तुलना में माइक्रो-डिग्री काफी छोटी अवधि की होती है, आमतौर पर कुछ सप्ताह से लेकर कुछ महीने तक।ये डिग्री किसी विशेष विषय या कौशल पर केंद्रित होती हैं, जैसे डेटा विज्ञान, डिजिटल मार्केटिंग, या प्रोग्रामिंग।माइक्रो-डिग्री ऑनलाइन या ऑन-कैंपस दोनों तरह से उपलब्ध होती हैं, जिससे छात्रों को अपनी सुविधा के अनुसार सीखने का मौका मिलता है।

नैनो-डिग्री क्या है?

अधिक छोटी अवधि:नैनो-डिग्री माइक्रो-डिग्री से भी छोटी होती हैं, और आमतौर पर कुछ हफ्तों में पूरी की जा सकती हैं। ये डिग्री किसी विशेष कौशल या टूल पर केंद्रित होती हैं, जैसे कि पायथन प्रोग्रामिंग या सोशल मीडिया मार्केटिंग। नैनो-डिग्री भी ऑनलाइन या ऑन-कैंपस दोनों तरह से उपलब्ध होती हैं, और अक्सर मॉड्यूलर होती हैं, जिससे छात्रों को अपनी जरूरत के अनुसार पाठ्यक्रम चुनने का मौका मिलता है।

माइक्रो-डिग्री के लोकप्रिय विषय

माइक्रो-डिग्री विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध होती हैं। कुछ लोकप्रिय विषयों में शामिल हैं: तकनीक:डेटा साइंस। मशीन लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ,साइबर सिक्योरिटी, क्लाउड कंप्यूटिंग, ब्लॉकचेन, डिजिटल मार्केटिंग, सोशल मीडिया मार्केटिंग, यूएक्स/यूआई डिजाइन, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट !

बिजनेसः फाइनेंस, अकाउंटिंग, मार्केटिंग, एंटरप्रेन्योरशिप, लीडरशिप, ह्यूमन रिसोर्स! विज्ञान:डेटा एनालिटिक्स, बायोटेक्नोलॉजी, पर्यावरण विज्ञान! मानविकी: डिजिटल ह्यूमैनिटीज, भाषा विज्ञान, शिक्षा!

नैनो-डिग्री के लोकप्रिय विषय :

नैनो-डिग्री और भी अधिक विशिष्ट होती हैं और किसी विशेष कौशल या टूल पर केंद्रित होती हैं। कुछ लोकप्रिय नैनो-डिग्री विषयों में शामिल हैं: प्रोग्रामिंग भाषाएंः पायथन, जावा, रूबी, आदि, डेटा विज्ञान टूल्सः पांडास, नंपाई, साइकिट-लर्न, क्लाउड प्लेटफॉर्मः एडब्ल्यूएस, एज़्योर, गूगल क्लाउड, डीजेन सॉफ्टवेयरः एडोब फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर, इनडिजाइन, डिजिटल मार्केटिंग टूल्सः गूगल विज्ञापन, फेसबुक विज्ञापन, एसईओ !

माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री में अंतर, प्रदानकर्ता, मान्यता और भविष्य

माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री आजकल उच्च शिक्षा के क्षेत्र में काफी चर्चा का विषय हैं। माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री में क्या अंतर है?

माइक्रो-डिग्री आमतौर पर कुछ सप्ताह से लेकर कुछ महीने तक की होती है, जबकि नैनो-डिग्री और भी छोटी अवधि की होती है, कभी-कभी केवल कुछ हफ्तों की। माइक्रो-डिग्री किसी विशेष विषय या क्षेत्र पर केंद्रित होती है, जैसे डेटा विज्ञान या डिजिटल मार्केटिंग।

नैनो-डिग्री और भी अधिक विशिष्ट होती है, जैसे कि एक विशेष सॉफ्टवेयर या टूल का उपयोग करना।

माइक्रो-डिग्री में विषय को थोड़ी गहराई से पढ़ाया जाता है, जबकि नैनो-डिग्री में किसी विशेष कौशल या टूल पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री प्राप्त करना पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है। कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और संस्थान ये कोर्स प्रदान करते हैं।

माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री प्राप्त करने के चरणः सबसे पहले आपको यह तय करना होगा कि आप कौन सा कौशल सीखना चाहते हैं। एक बार जब आप अपने लक्ष्य को निर्धारित कर लेते हैं, तो आप उस विषय पर आधारित माइक्रो-डिग्री या नैनो-डिग्री की खोज कर सकते हैं। एक प्लेटफॉर्म चुनें: कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसेकोर्सेरा, ईडीएक्स, उदमी, लिंक्डइन लर्निंग, आदि माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री प्रदान करते हैं।

आप अपनी आवश्यकताओं और बजट के अनुसार एक प्लेटफॉर्म चुन सकते हैं। एक बार जब आप एक प्लेटफॉर्म चुन लेते हैं, तो आप अपने लक्ष्य के अनुरूप कोर्स की खोज कर सकते हैं। आप कोर्स के सिलेबस, अवधि, और फीस की तुलना कर सकते हैं। एक बार जब आप एक कोर्स चुन लेते हैं, तो आप नामांकन प्रक्रिया को पूरा कर सकते हैं। आमतौर पर, आपको एक ऑनलाइन फॉर्म भरना होता है और फीस का भुगतान करना होता है।

आप अपने चुने हुए प्लेटफॉर्म पर कोर्स सामग्री का अध्ययन कर सकते हैं। इसमें वीडियो लेक्चर, क्विज, असाइनमेंट और प्रोजेक्ट शामिल हो सकते हैं। कोर्स पूरा करने के बाद, आपको एक सर्टिफिकेट दिया जाएगा। यह सर्टिफिकेट आपके रिज्यूमे में जोड़ने के लिए उपयोगी होगा।

माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री प्राप्त करने के लिए कुछ सुझावः अपने लक्ष्य को स्पष्ट रखें, यह आपको सही कोर्स चुनने में मदद करेगा। विभिन्न प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कोर्सों की तुलना करके आप सबसे अच्छा विकल्प चुन सकते हैं। अन्य छात्रों की समीक्षा पढ़कर आप कोर्स के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। नियमित रूप से अध्ययन करने के लिए एक समय सारणी बनाएं। अन्य छात्रों के साथ जुड़ें: आप ऑनलाइन फोरम या सोशल मीडिया ग्रुप के माध्यम से अन्य छात्रों के साथ जुड़ सकते हैं।

भारत में माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री प्रदान करने वाले कुछ प्रमुख संस्थानः आईआईटीः भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, आईआईएमः भारतीय प्रबंधन संस्थान, एनपीटीईएलः राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कौरसेरा, ईडीएक्स, उदमी, लिंक्डइन लर्निंग!

कुछ कंपनियां भी अपने कर्मचारियों के लिए माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री प्रदान करती हैं। इन डिग्रियों को आमतौर पर विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाता है और उनकी मान्यता विश्वविद्यालय की मान्यता पर निर्भर करती है।

ऑनलाइन शिक्षण मंचों द्वारा प्रदान की गई डिग्री की मान्यता मंच और प्रदानकर्ता संस्थान पर निर्भर करती है। कॉर्पोरेट प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्रदान की गई डिग्री की मान्यता कंपनी के आंतरिक मानकों पर निर्भर करती है।

इन डिग्रियों का भविष्य क्या है?

बदलते कार्य वातावरण में विशिष्ट कौशल की मांग बढ़ रही है, जिससे माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री की मांग भी बढ़ रही है। ये डिग्री छात्रों को अपनी गति से और अपनी सुविधानुसार सीखने का मौका देती हैं। पारंपरिक डिग्री की तुलना में ये डिग्री अधिक किफायती होती हैं। ये डिग्री छात्रों को विशिष्ट कौशल प्रदान करती हैं जो उन्हें नौकरी बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाती हैं।

माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री के फायदे

छात्र अपनी गति से और अपनी सुविधानुसार सीख सकते हैं। पारंपरिक डिग्री की तुलना में ये डिग्री अधिक किफायती होती हैं। ये डिग्री छात्रों को विशिष्ट कौशल प्रदान करती हैं जो उन्हें नौकरी बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाती हैं। ये डिग्री छात्रों को अपने करियर के दौरान नए कौशल सीखने और अपने ज्ञान को अपडेट करने का मौका देती हैं।

माइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री के उपयोग

जो लोग अपना करियर बदलना चाहते हैं, उनके लिए ये डिग्री बहुत उपयोगी होती हैं। जो लोग अपने मौजूदा कौशल को बढ़ाना चाहते हैं, उनके लिए ये डिग्री मददगार होती हैं। जो लोग अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, उनके लिए ये डिग्री आवश्यक कौशल प्रदान करती हैं। संक्षेप मेंमाइक्रो-डिग्री और नैनो-डिग्री उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक नया और रोमांचक विकास हैं। ये डिग्री छात्रों को अधिक लचीलापन, किफायतीता और विशिष्ट कौशल प्रदान करती हैं। भविष्य में, इन डिग्रियों की मांग और अधिक बढ़ने की उम्मीद है।

-प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय,
विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

पुस्तक समीक्षा : सृष्टि के कण-कण में चित्त का रमण

कवि और लेखक दशरथ कुमार सोलंकी का ललित निबंध संग्रह कण-कण विचरण वस्तुतः सृष्टि के कण-कण में निबंधकार के चित्त का रमण है। कविता के वर्तमान दौर में अपने निजी काव्य मुहावरे के कारण अत्यधिक चर्चित और प्रशंसित चार कविता संग्रहों के बाद युवा कवि और लेखक दशरथ कुमार सोलंकी की हाल ही में गद्य कृति : कण-कण विचरण (ललित निबंध संग्रह) का पाठक समुदाय के लिए मंज़रे आम पर आना सुखद अहसास से कम नहीं है। दशरथ सोलंकी प्रेम, प्रकृति, संस्कृति और लोक जीवन के चितेरे रचनाकार हैं। वे सृष्टि के कण-कण से प्रेम करते हैं। चाहे वह रजकण हो अथवा जलकण। वायु कण हो अथवा अग्निकण। फूलों के परागकण से तो उन्हें सर्वाधिक लगाव है। इसलिए कण-कण में रमण उनके स्वभाव का हिस्सा कहा जा सकता है।

यह रमणभाव विचरण, भ्रमण और परिक्रमण आदि से बहुत आगे की चीज़ है। जहाँ चीज़ों को पर्यटक की नज़र से नहीं, बल्कि निकट संबंधी की दृष्टि से देखा जाता है। मन की आँखों से परखा जाता है। ललित निबंध के रचाव का बीजवपन इसी रमणीयता की कोख में होता है। यही रमणीयता, लालित्यबोध, रसिकता, सघन संवेदनशीलता, भाषिक मिठास, शाब्दिक शिल्प -विन्यास और उपेक्षित के प्रति अपनत्व की मनोभूमि का अहसास निबंधकार दशरथ सोलंकी के ललित निबंधों की खूबियां कही जा सकती हैं। दशरथ कुमार सोलंकी राजस्थान राज्य के जालोर जिले की सूकड़ी नदी के किनारे बसे गाँव तिलोड़ा से आते हैं और संप्रति जोधपुर शहर में बस जाते हैं। दशरथ को पानी और रेत से विशेष हेत है। इनके ललित निबंध-संग्रह के अधिसंख्य निबंध जलकण और रजकण के आख्यान हैं। कालिंदी की प्रतीक्षा, लोक कानाजी और जल, गाँव का कुआँ, गाँव-गमन, कहाँ से आए बदरा और दादी का राग मेघ मल्हार आदि ललित निबंध इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। मेरी नज़र में ललित निबंध लेखन गद्य साहित्य की सर्वाधिक कठिन विधा है। ललित निबंध को गद्य लेखन की कसौटी कहा जा सकता है।

सन् 1940 से लगाकर आजतक यदि ललित निबंध लेखकों की पड़ताल की जाय तो कुल मिलाकर निराशा ही हाथ लगेगी। गिनी चुनी संख्या से आगे बढ़त नज़र नहीं आती, मसलन आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (कुटज, अशोक के फूल), विद्यानिवास मिश्र (मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, तुम चंदन हम पानी), कुबेरनाथ राय (प्रिय नीलकंठी, आगम की नाव), विवेकी राय (गंवई गंध गुलाब, जुलूस रुका है), अष्टभुजा शुक्ल (पानी पर पटकथा, सूरज डूब गया), श्रीराम परिहार (आंच अलाव की, झरते फूल हरसिंगार के) आदि से आगे बढ़त अत्यंत अल्प है। ऐसी स्थिति में कवि दशरथ कुमार सोलंकी का ललित निबंध के क्षेत्र में आगमन बहुत बड़ी आश्वस्ति कही जा सकती है। दशरथजी का लालित्यबोध देखते ही बनता है। बतौर बानगी कालंदी की प्रतीक्षा शीर्षक निबंध का यह अंश देखिए :

'उसकी जल-देह में रोज़ परछाई उभरती है कृष्ण की.. वह अपने अनुरागी अश्रुकण से उन्हें नहलाती है...और फिर बहने लगती है, कुछ पानी तो कुछ अश्रुकण लिए। उसे पता है कृष्ण की प्रतीक्षा व्यर्थ है, पर अब वह इस प्रतीक्षा पर विराम के लिए अपने जीवन की पूर्णता हेतु प्रतीक्षारत है।

इसी प्रकार कण-कण विचरण शीर्षक ललित निबंध में दशरथ सोलंकी लिखते हैं :

मैं रेगिस्तान के धोरों पर मांडना चाहता हूँ अपने पैरों के निशान। जीवन की क्षणभंगुरता को उन निशानों से आत्मसात करना चाहता हूँ, भला रेत पर कौनसे निशान अमिट रहे हैं ,सिर्फ़ उद्यमी मानव की जिजीविषा के अलावा। पेड़ के साथ बीते पल मेरी ज़िंदगी के हासिल हैं। धीरे-धीरे यूँ हुआ कि मेरा हर चिंतन पेड़ की ओर उन्मुख हुआ। पेड़ अंतस् में उग आया, या अंतस् ही पेड़ बन गया।

हक़ीक़त तो यह है कि दशरथ सोलंकी के ललित निबंध उनकी अंतर्यात्राएँ हैं। उनके मन-दर्पण हैं। आत्म साक्षत्कार हैं। मौन-मुखर हृदय संवाद हैं। अंत:चक्षु से सृष्टि को देखने-परखने के उपक्रम हैं। यदि आज की तकनीकी सोशल मीडिया की भाषा में कहूँ तो दशरथ कुमार सोलंकी के कण-कण विचरण के ये इक्यावन ललित निबंध उनके मानवीय व्यक्तित्व की सेल्फ़ियाँ हैं। एक निबंध में वे शब्द की कविता के साथ कर्म की कविता की बात करते हैं। खेत में किसान हल की कलम से धरती के कागज़ पर फसल की कविता ही तो लिखता है। सोलंकी जी पेड़ों की पत्तियों से उदासी का सबब पूछते हैं। उपेक्षित बोरड़ी से बतियाते हैं। सूखे कुएँ की पीड़ा को मांडते हैं। दादी और माँ के अकूत स्नेह और आशीष का स्मरण करते हैं। ग्राम्यजीवन की आत्मीय पगडंडियों, पशु पक्षियों, बाल सखाओं, परंपराओं, तीज त्योहारों और गुरुजन-परिजन को हमेशा स्मृतियों में जीवित रखते हैं। वे पेड़ के रूप में ही पुनर्जन्म के आकांक्षी हैं।

अपने संग्रह का समर्पण वे पेड़ ही के नाम करते हुए लिखते हैं :-

पेड़ को, जो मेरा साथ कभी नहीं छोड़ता
और जो, धरती के बाद मेरी आत्मा पर उग आया है।

इस प्रकार प्रेम पगे, रस भीगे, धनक रंगे, संबंधों की डोर बंधे दशरथ कुमार सोलंकी के ललित निबंध पाठक के दिल और दिमाग़ को एक साथ झंकृत करने में समर्थ हैं। संस्कृतनिष्ठ भाषा के साथ लोक की बोली-बानी की मिठास इन निबंधों और अधिक ग्राह्य बनाती है।

उदाहरण के लिए प्रकल्प, कल्प, विकल्प, सप्तपर्णी, शैल, सरिता जैसे शब्दों के संग लुळलुळ, रड़क, मुळक, मांडना, करमठोक, दिनूँगे जैसे शब्दों की संगति मन को गहरे स्तर पर आकृष्ट करती है। अलावा इसके मेह के नेह में, देह की देहरी पर, दु:ख के शैल-सुख की सरिता जैसी लयात्मक भाषा और अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, मिथक और शब्दशक्ति का प्रयोग भी निबंधों में देखते ही बनता है। सच मानिए, कण-कण विचरण के ललित निबंधों को पढ़कर हृदय राघव और मन माधव हो गया। अंत में दशरथ कुमार सोलंकी के इसी पथ पर रचनात्मक उत्कर्ष की कामना करते हुए अपनी लेखनी को यहीं विराम देता हूँ।

- डॉ. रमाकांत शर्मा

राशिफल बुधवार 11 दिसम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, रेवती नक्षत्र दिन 11:48 तक, वारियान योग दिन 6:47 तक, वणिज करण दिन 2:26 तक, चन्द्रमा दिन 11:48 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 11:48 से आरम्भ होगा। कुमार योग दिन 11:48 से रात्रि 1:10 तक है। आज भद्रा दिन 2:26 से रात्रि 1:10 तक रहेगी। आज मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती, मोनी एकादशी (जैन) है। पंचक दिन 11:48 पर समाप्त होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:45 तक, शुभ 11:02 से 12:20 तक, चर 2:55 से 4:13 तक, लाभ 4:13 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:10, सूर्यास्त 5:30

मेष

घर-परिवार के खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक व्यक्गित परेशानियां दूर होने लगेगी।

वृष

अपने अति आवश्यक आर्थिक/वित्तीय मामलों को दिन के मध्यान्ह पूर्व में करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात में समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कन्या

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्रमा शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात यात्रा शुभ नहीं है।

तुला

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

मकर

व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन

अपने कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है।